पीलिया

पीलिया, आंखों और त्वचा पर एक पीले रंग की परत के रूप में मुख्यतः दृष्टिगोचर होती है।

इसमें शारीरिक प्रक्रिया क्या होती है?

पीलिया रक्त में बिलीरुबिन की अधिकता के कारण होता है। बिलीरुबिन लाल रक्त कोशिकाओं का एक पीले रंग का नारंगी रसायनिक परिवर्तन वाला उत्पाद है। यह रक्त से यकृत द्वारा हटा दिया जाता है, पित्त से होता हुआ मल में उत्सर्जित होता है। अगर यह उत्सर्जित नहीं होता है, तो यह रक्त में बढ़ जाता है आखिरकार बिलीरुबिन शरीर की सतह में बाहर निकल आता है। इससे त्वचा, आंखों और मुँह के भीतरी सतह में पीले रंग का आवरण हो सकतें हैं।

इसके संकेत एवं लक्षण क्या हैं?

पीलिया की बीमारी का संकेत शरीर में बिलीरुबिन के स्तर को प्रभावित करना माना जाता है। पीलिया वाले लोगों में कोई अन्य लक्षण नहीं होतें। अन्य कारणों के आधार पर कुछ लक्षण दिखाई दे सकते हैं, जिनमें सम्मिलित है।

मतली और भूख में कमी
उल्टी
बुखार
वजन घटना
खुजली
पेट में दर्द
मिटटी के रंग का मल
गाढ़े रंग का मूत्र

पीलिया के कारण और खतरे।

यकृत की अपरिपक्वता, जो बड़ी संख्या में नवजात बच्चों में होती है। यह साधारण रूप से सामान्य होता है, अपने आप दूर हो जाता है, और कोई भी समस्या नहीं होती है। जब बच्चे अपरिपक्व या समयपूर्व जन्म लेते हैं, यह सामान्य है। यकृत की बीमारी, यकृत के संक्रमण, शराब या अन्य विषैले पदार्थों या नशीली दवाइयो अथवा कैंसर से क्षति पहुंचने से होती है। पित्त के प्रवाह में रुकावट, कुछ दवाओं, पित्त पथरी या कैंसर के कारण हो सकता है। लाल रक्त कोशिकाओं की एक बड़ी संख्या के विनाश का कारण, दवाओं या संक्रमणों द्वारा विरासत में मिले दोषों से हो सकता है। क्योंकि वंशानुगत विकार रसप्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।

बचने के लिए क्या कर सकतें है?

व्यस्कों में, पीलिया के सबसे सामान्य कारणों में से दो वायरल यकृत संक्रमण हैं जो हैपाटाइटिस और शराब के रूप में जाना जाता है। शराब इस स्थिति का कारण नहीं है जब तक कि पीड़ित उसका आदी नहीं हो जाता है। हैपाटाइटिस बी का टीका उपलब्ध है और वायरल हैपाटाइटिस के कुछ मामलों को रोका जा सकता है। फिर भी पीलिया के कई मामलों को रोका नहीं जा सकता।

इसको कैसे पहचाना जा सकता है?

प्रभावित व्यक्ति में पीलिया को स्वास्थ्य सेवा प्रदाता आमतौर पर पहचान करते हैं। पीलिया के कारणों का निर्धारण करने के लिए और अधिक परीक्षण किए जाते हैं। जिनमें आमतौर पर मूत्र, रक्त, और एक्सरे परीक्षण शामिल हैं।

इसके दीर्घकालीन प्रभाव क्या हैं?

पीलिया में कोई दीर्घकालीन प्रभाव नहीं होता है। पीले रंग की रंगत ही इसका विवरण होता है। हालांकि पीलिया के अंतर्निहित कारण में गंभीर दीर्घकालीन प्रभाव हो सकते हैं, जिनमें यकृत की विफलता और मृत्यु भी सम्मिलित है। पीलिया वाले शिशुओं में शायद ही कभी मस्तिष्क क्षति हो सकती है, जब इसमें बिलीरूबिन का स्तर बहुत अधिक हो जाता है।

दूसरों के लिए कितना खतरनाक हैं?

पीलिया स्वयं संक्रामक नहीं होने के कारण दूसरों के लिए कोई खतरा नहीं है। यदि वायरल हैपाटाइटिस, पीलिया का कारण है, तो यह संक्रामक हो सकता है क्योंकि संक्रामक रोग हैपाटाइटिस के रूप में आम तौर पर यौन संपर्क या संक्रमित सुइयों के इस्तेमाल से फैलता है, जैसे नशीली दवाओं के उपयोगकर्ताओं द्वारा।

इस स्थिति में क्या उपचार हैं?

किसी नवजात शिशु में, पीलिया के अधिकांश मामलों में उपचार की आवश्यकता नहीं होती है। यदि नवजात शिशुओं में गंभीर पीलिया का विकास होता है, तो उन्हें विशेष रोशनी में रखा जा सकता है, जो बिलीरुबिन में रसायनिक परिवर्तन का कारण बनता है। यह बदलाव बिलीरुबिन को शरीर में उत्सर्जित करने में सहायता प्रदान करता है। रक्त में बिलीरुबिन के अधिक उच्च स्तर में शिशुओं को विशेष रक्त आधान की आवश्यकता हो सकती है, जो उनके उच्च बिलीरूबिन स्तर वाले रक्त के लिए सामान्य रक्त का संचार करता है। अन्य प्रकार के पीलिया का उपचार उनके कारणों पर निर्भर करता है। कुछ मामलों में, एंटीबायोटिक दवाएं, या शल्य चिकित्सा की आवश्यकता हो सकती है।

उपचार के दुषप्रभाव क्या हैं?

पीलिया में नवजात शिशुओं के उपचार के लिए इस्तेमाल होने वाली रोशनी से, दस्त, खाज व ज्यादा सिकाई के कारण त्वचा का झुलसना और शरीर में पानी की कमी हो सकती है। यदि एक भी रक्त आधान की आवश्यकता होती है, तो संक्रमण हो सकता है। सभी दवाओं के संभावित दुषप्रभाव हैं। इसमें एलर्जी की प्रतिक्रियाएं, पेट में परेशानी, इत्यादि सम्मिलित हो सकते हैं। विशिष्ट दुषप्रभाव, प्रयोग की गई दवाओं पर निर्भर करते हैं। शल्य चिकित्सा में इस्तेमाल किए जाने वाली दर्द की दवाओं से रक्तस्राव, संक्रमण, और प्रतिक्रियाओं का खतरा होता है।

इस में उपचार के बाद क्या होता है?

यह अंतर्निहित कारण पर निर्भर करता है। अंतर्निहित कारणों का इलाज या स्वयं समाधान हो सकता है, जिससे पीलिया स्वतः ही चला जाता है। इस परिस्थिति में कोई और उपचार की आवश्यकता नहीं रहती और लोग आम तौर पर सामान्य गतिविधियों में वापस आ जातें हैं। अन्य मामलों में अंतर्निहित स्थिति तय नहीं की जा सकती। यह गंभीर, स्थायी यकृत क्षति या कैंसर के साथ आम है। इस स्थिति में उपचार आमतौर पर समाप्त नहीं होता है।

इसकी निगरानी कैसे हो?

यह अंतर्निहित कारणों पर भी निर्भर करता है। प्रभावित व्यक्ति और स्वास्थ्य सेवा प्रदाता दोनों ही पीलिया की स्थिति पर निगरानी रख सकते हैं। दोबारा रक्त परीक्षण बिलीरुबिन स्तर, यकृत कार्य परीक्षण और अन्य कारकों की निगरानी के द्वारा अधिक विशिष्ट निगरानी अंतर्निहित कारणों पर निर्भर करती है।

याद रखें पीलिया जीवन के लिए खतरा है इसलिए हमेशा समय पर उचित चिकित्सा सहायता प्राप्त करें।

पीलिया

(JAUNDICE)

कुछ तथ्य जो आपको जानना जरूरी है।

यह पर्चा जन कल्याण के लिए निर्मित किया गया है।

गावेलॅान
पोस्ट बॉक्स नम्बर – 286
देहरादून जी०पी०ओ० – 248001
उत्तराखण्ड
भारत